www.faithbook.in

Faithbook™
ACTIVITIES BEYOND BOOK

06th JUNE 2021
Issue 14

BOOK 026

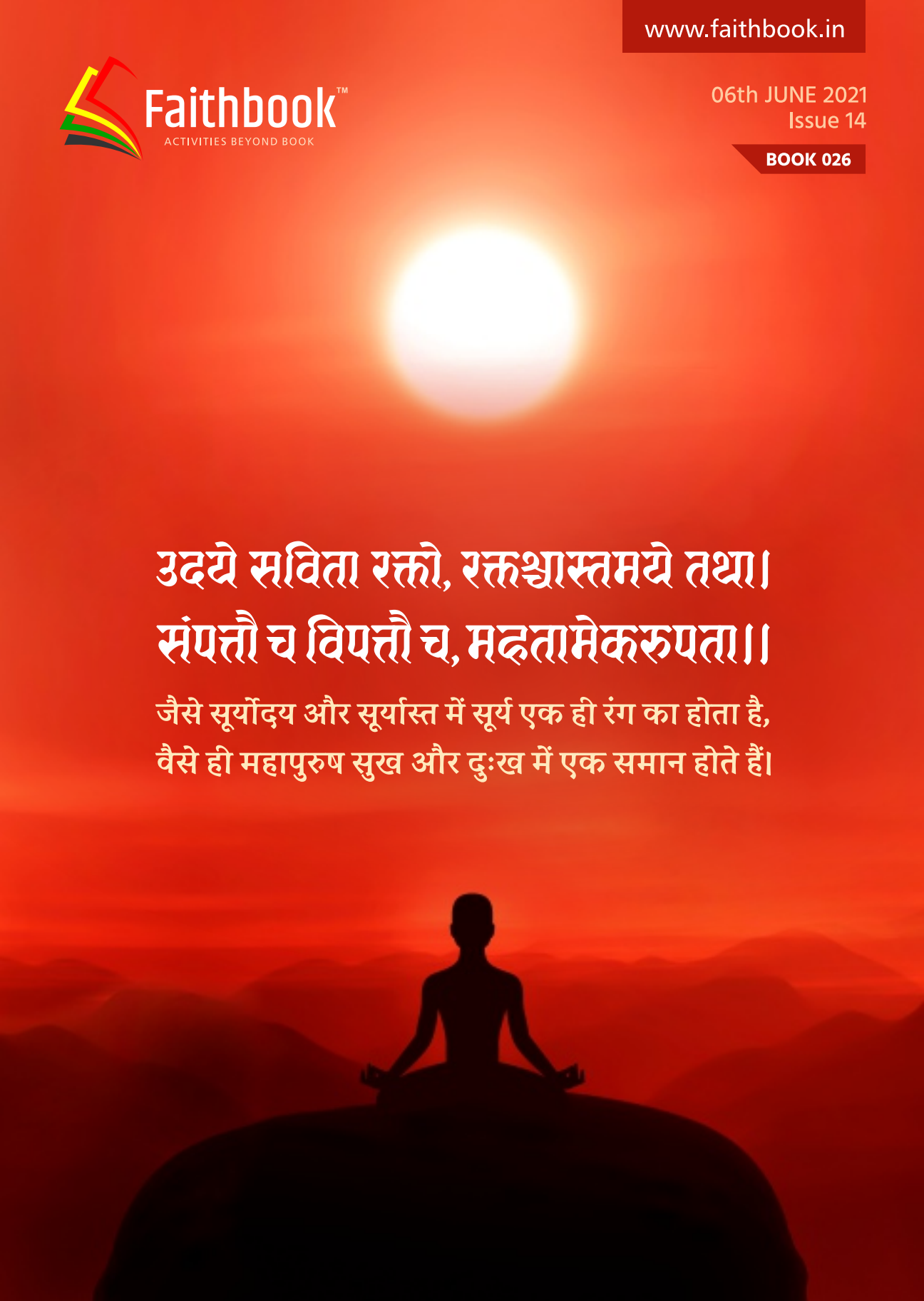

उदये सविता रक्तो, रक्तश्चास्तमये तथा।
संपत्तौ च विपत्तौ च, महतामेकरुपता।।

जैसे सूर्योदय और सूर्यास्त में सूर्य एक ही रंग का होता है,
वैसे ही महापुरुष सुख और दुःख में एक समान होते हैं।

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

संसार के स्वरूप का दर्शन कराये वह ज्ञान है।

सादर प्रणाम,

परमोपकारी जिनशासन में शास्त्रकारों ने कहा है कि उत्तम पुरुष -महापुरुष स्वयं या रिश्तेदार के साथ घटी हुई किसी एकाध घटना से समग्र संसार के स्वरूप को पहचान लेते हैं। जैसे कि खिचड़ी बन गई है या नहीं वह जानने के लिए सारे दाने दबाकर देखना जरूरी नहीं है, किसी एकाध को दबा दिया जाए तो भी पता चल जाता हैं।

Faithbook द्वारा प्रकाशित यह Knowledge Book हमें संसार का स्वरूप बताने का ही एक प्रयास कर रही है। विविध विषयों पर लिखित सभी लेख पाठकों को संसार का स्वरूप समझाने और धर्म का मर्म समझाने में आधारभूत बने यही शुभाभिलाषा !

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

Red signal for instant food 01
पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

अनीति से पैसा मिलता है या पुण्य से? 04
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

आत्मा स्वयं है, स्वयंभू है, वो ही प्रभु है। 09
पू. पं. श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 8.0 11
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

अनोखी अस्मिता 14
प्रियम्

गोडीजी का इतिहास – 2 18
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

शुद्धि और सिद्धि का उपाय 22
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

देव कौन और नारकी कौन? 24
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 13 26
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

Red signal for instant food

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

इन्स्टन्ट फुड

पिछले तीन दशकों में तेजी से विकसित इन इन्स्टन्ट पेक्ट्रियों ने बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी की जरूरत पूर्ण की हैं। स्कूल से आते ही भूखे बच्चों को तुरन्त दें सके ऐसे 'नूडल्स' इन कम्पनियों ने तैयार किए है। ऑफिस से आने पर बड़े लोगों के लिए आरामदायक 'इन्स्टन्ट टी' और 'इन्स्टन्ट कॉफी' शीघ्र तैयार हो सकती है। इडली, ढोसा, गुलाब जामुन, पीत्झा आदि तुरन्त तैयार हो जाए, ऐसे इन्स्टन्ट पैकेट बाजार में मिलते हैं। इससे काफी मुनाफा होता है। इसी से डॉक्टर, हॉस्पीटल और मेडिकल स्टोर्स वाले को भी अच्छी खासी कमाई होती है। बाजार में मिलते ये फास्ट फूड शरीर को पोषक तत्त्व नहीं दे सकते हैं।

पश्चिमी जीवन शैली और विचारधारा के रंग में रंगी हुई युवा पीढ़ी 'रेडी टु इट' फुडों से बहुत आकर्षित है। जैसे-जैसे इन 'फास्ट फुड' की बिक्री बढ़ रही है, वैसे–वैसे आरोग्यता घट रही है। आज की युवा पीढ़ी को कृत्रिम खाद्य सामग्री की आदत चिपके जा रही है। विश्व आरोग्य संस्थान ने भी फास्ट फूड से हृदयरोग की बीमारी की चेतावनी दी है। वैसे भी ग्रामीण बस्ती से शहर में बसने वाले लोगों में हृदयरोग की बीमारी का प्रमाण अधिक है। क्योंकि गाँवों में फास्ट फूड की आवश्यकता महसूस नहीं होती है।

आरोग्य, शक्ति और दीर्घायु होने के लिए शुद्ध और ताजा भोजन आवश्यक है। फास्ट फुड को लज्जतदार बनाने हेतु उपयोग में लिए गए विविध मसाले और एसेन्स भी ऊँची क्वालीटी के नहीं होते है।

बाजारु पेय, अचार, होट डोग, जाम जेली में आने वाले अमारन्थ से केन्सर होता है और शरीर में रहे शुक्राणु की मात्रा घटती है, जिसका असर भविष्य में होने वाली संतति पर पड़ता है।

हमारे देश में बड़ी संख्या में लोग गाँवों में बसते हैं। उन्हें अभी तक इन्स्टन्ट फुड के दूषण ने स्पर्श नहीं किया है।

और महंगी कीमत के कारण भी यह निर्धन प्रजा के पास नहीं पहुंचा है। इस प्रकार इसकी महंगी कीमत गरीबों के लिए आशीर्वाद समान है, कि जिससे वे खरीदते नहीं और रोग के भोग नहीं बनते हैं। अस्पताल दर्दियों से खाली नहीं हो पा रहे हैं। रोग व मृत्युकारी इन्स्टन्ट फुड का त्याग ही लाभ-प्रद है।

डॉ. डेवीड रूबे द्वारा रेड सिग्नल

अमेरिकन डॉ. डेबीड रूबे (एम.डी) ने अपने देश-वासियों को बाजारू तैयार भोजन के दुष्परिणाम बताकर सचेत किया है। आज हम उसी राह पर जा रहे हैं। अतः डॉ. रूबे की बात को समझकर हमें खराब आहार के दुष्परिणाम से बचना चाहिए। अमेरिकन डाक्टर के महत्वपूर्ण लेख का सारांश:

"मेरे प्रिय देशबंधुओं "

'जागो! आप सुबह में नारंगी-मोसंबी का अकुदरती रस पी रहे हैं? जिससे कुदरती पके हुए ताजे और आरोग्यवर्धक फल खाने की इच्छा मिट गई है। आपके समक्ष ब्रेड (डबल रोटी), मार्जेरीन (कृत्रिम मक्खन), रासायनिक पदार्थों से निर्मित कॉफी रखी जाती है। आपको सेक्रीन और कृत्रिम रंगों वाले अकुदरती विटामीन खाने की आदत हो गई है।"

"मित्रों! आप जानते हैं? आप अपने भोजन में प्रति-दिन पांच हजार से अधिक अकुदरती रसायन ले रहे हैं। आप प्रतिवर्ष छह रतल (लगभग पौने तीन किलो) से अधिक कृत्रिम संरक्षक दवाइयाँ (Pre-servatives) आरोग रहे हैं। जिसके परिणाम स्वरूप मेदवृद्धि, हृदयरोग, मधुमेह और केन्सर जैसे रोगों का शिकार बन रहे हैं।'

'मानव जाति के इतिहास में इतनी अधिक मात्रा में रोग कभी विकसित नहीं हुए। आपके सड़े हुए भोजन Routine Diets का यही परिणाम है, जिनके उत्पादक दूसरा कोई नहीं अपनी अमेरिका के राक्षसी कारखाने ही है। इन कारखानों के संचालक और इन्हें बेचने वाले दलाल, इन कृत्रिम रासायनिक पदार्थों को आरोग्यवर्धक कहते हैं। इस असत्य को सत्य साबित करने के लिए बड़े केन्द्र की स्थापना की है। इनके प्रचार में दो अरब डॉलर से भी अधिक धनराशि खर्च की जाती है।'

'अमेरिकन भाई-बहनों! अन्तिम में अन्तिम आधार-भूत वैज्ञानिक तथ्यों की बात भी सुन लीजिए। इस जगत में सबसे अधिक आरोग्यप्रद आहार लेने वाले आप और आप ही है।"

You eat one of the worst diets in the world and it is hurting you and your children more then you are willing to admit.

डॉ. डेवीड अपनी वेदना की चरमसीमा पर पहुंच-कर कहते है।

मित्रों!

आपको कचरे जैसा भोजन Garbage food दिया जाता है। उस भोजन को Modern Diet कहा जाता है।'

'ओ अमेरिकन लोगों! तुम्हारे और तुम्हारे संतानों के सामने भयंकर अणुशस्त्र भयरुप नहीं है। परन्तु आज रात्रिभोजन में आप क्या खाएँगे, यह ज्यादा भयरुप है।"

'आफ्रिका सहित तीसरे विश्व की गरीब प्रजा भी अमेरिका से अधिक पोषणक्षम खुराक लेती है। सर्वेक्षण में प्राप्त हकीकत कहती है कि तीसरे विश्व के इन गरीब लोगों को केन्सर, हृदयरोग, मधुमेह जैसे रोग, जो कि अमेरिका के लिए सहज है, वह उनको बहुत कम होते है। और जो लोग अमेरिकनों का अनुकरण कर बाजारु बासी, सड़ा हुआ आहार खाते हैं, वे सभी भयंकर रोगों की पकड़ में फँसते हैं।

आरोग्यवर्धक (?) कहे जाने वाले कोकोकोला, 7-अप, पेप्सीकोला जैसे मादक पेय के भयस्थानों को वैज्ञानिक साक्ष्य द्वारा इस लेखक ने प्रस्तुत किया है। इस मानवतावादी डाक्टर ने ऐसे पेय के सामने लालबत्ती रखकर, उससे दूर रहने के लिए अमेरिकन जनता को अंतरस्पर्शी सलाह भी अपनी इस पुस्तक में दी है। साथ ही ऐसे पेय व खाद्य पदार्थ बनाने वाली फूड इन्डस्ट्री और सभी कार्पोरेशनों को वे भगवान के लिए और अमेरिका की भावी पीढ़ी के भले के लिए यह आर्थिक प्रवृत्ति छोड़कर बाहर निकल जाने की सलाह और भयपूर्वक विनती करते है।

नमक में आयोडिन मिलाने के विरुद्ध यह डाक्टर अन्य तथ्यों पर भी भार देते है। दूध, कितने ही फल और साग-भाजी में सहजता से पर्याप्त आयोडिन प्राप्त हो जाते है। अतः कृत्रिम रूप से तैयार किया गया आयोडिन नमक में मिलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। अनावश्यक आयोडिन से रोगों को आमंत्रण प्राप्त होता है। कितने ही आरोग्यप्रेमी अपने भोजन में नमक का सम्पूर्ण त्याग करते है। ये लोग ज्यादा अच्छा आरोग्य प्राप्त करने हेतु भाग्यशाली बनते है। इस अनुभव सत्य को भूलना नहीं चाहिए।

डॉ. डेवीड ने ऐसे अनेक कारणवश अमेरिका में बिकने वाले आहार को अपनी पुस्तक में बार-बार Junk food, Rutten food, Garbage food. जैसे शब्दों से पुकारा है। उन्होंने पाँच हजार अकुदरती रसायनों के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। हमारे लिए भी डॉ. डेवीड की बातें रेड सिग्नल समान हैं, हमें सावधान हो जाना चाहिए।

Eat Right, Live Bright

अनीति से पैसा मिलता है या पुण्य से?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

अनीति से अंतराय बँधता है यह जिनोक्त बात हमने पिछले लेख में बैंक के दृष्टांत से देखी। इस लेख में हम इसे शास्त्रीय तर्क के द्वारा देखेंगे।

श्री बृहत्कल्पसूत्र की 1049 वीं गाथा की टीका में reference के रूप में दी गई गाथा में कहा है कि:

दरव्वं खेत्तं कालं भावं च भवं तहा समासज्ज।
तस्स समासुदिट्ठो उदओ कम्मस्स पंचविहो॥

अर्थात्,

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव के अनुसार उन कर्मों का पांच प्रकार से हो रहे उदय को संक्षिप्त में बताया गया है।

अर्थात्, हमारे कर्मों पर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव, इन पांचों का प्रभाव होता है। जो इस तरह है :

द्रव्य :

अस्थमा के Patient को फिलहाल अच्छा है, कोई तकलीफ नहीं है, शाता वेदनीय का उदय चल रहा है। पर जैसे ही वह दही या केला खाएगा तो यह द्रव्य शाता के उदय को स्थगित कर देगा। अशाता का उदय चालू हो जाएगा। साँस की तकलीफ चालू हो जाएगी। फिर जैसे ही वह योग्य दवाई लेगा तो इस द्रव्य के कारण, फिर से अशाता के उदय को रोककर शाता का उदय चालू हो जाएगा। साँस फिर से नोर्मल हो जाएगा।

श्री अरिहंत परमात्मा रुपी द्रव्य के सान्निध्य में आये हुए जीवों पर उनकी ऐसी असर होती है कि, वैरी जीवों के वैरजनक कर्म शांत पड़ जाते हैं। वासनातुर जीवों के वासनाजनक कर्म शांत पड़ जाते हैं। इसे द्रव्यों का कर्मों पर हो रहा असर कहते हैं।

क्षेत्र :

अस्थमा का Patient मुंबई में आये तो अशाता का उदय चालू रहता है। साँस लेने की तकलीफ चालू रहती है। मारवाड़ में जायेगा तो शाता का उदय हो जाता है, साँसे नोर्मल हो जाती हैं।

बाजार से दूर के एरिया में मात्र एक चौथाई पैसा खर्च करके भी बढ़िया शो रुम बन सकता हो तो भी व्यापारी नहीं बनाता, क्योंकि वहाँ पैसा कमाने वाले पुण्य को उदय में नहीं लाया जा सकता है। अपने जीवन में चालू दिनों में दानांतराय के उदय वाले जीवों को भी हम तीर्थक्षेत्र में उदारता से दान देते हुए देखते हैं। तो यह हुआ क्षेत्र का असर।

काल :

गर्मियों में दमे के रोगी को राहत मिलती है। पर चौमासे में या सर्दियों में तकलीफ हो जाती है। जिन्हें रोज नवकारशी करना भी मुश्किल लगता है; वैसे लोग पर्युषण में अट्ठाई कर लेते है। पूरे वर्ष में जितनी कमाई ना हुई हो उतनी कमाई सीजन के मात्र 15 दिनों में ही हो जाती है, ऐसा कई व्यापारियों का अनुभव है। यह है काल का कर्मों पर होता असर।

भाव :

हम नये साल के पहले दिन मांगलिक क्यों सुनते हैं? घर से बाहर जाते समय 3 नवकार क्यों गिनते हैं? क्योंकि इस मांगलिक श्रवण या नवकार का स्मरण करने से जो शुभ भाव प्रगट होते हैं, उसका असर हमारे जीवन में विघ्न लाने वाले पापकर्मों पर पड़ता है। वे कर्म या तो निर्मूल हो जाते हैं, या फिर उनका पावर नष्ट हो जाता है।

तीव्र क्रोध से अशाता का उदय होता है जो B.P. आदि की तकलीफों को बढ़ा देता है। यह भावों का कर्मों पर होता असर है।

भव :

देव और नारकी के भव ऐसे हैं कि जहाँ अवधि ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षयोपशम हो ही जाता है। और चारित्र मोहनीय पर ऐसा असर पड़ता है कि, देव चाहे कितना ही प्रचंड वैरागी या तीव्र अनासक्त हो, पर चारित्र मोहनीय का क्षयोपशम होता ही नहीं है।

हमारे यहाँ अषाढ़ाभूति आचार्य की बात आती है। वे अपने शिष्यों को आगाढ़ जोग (ऐसे जोग कि जिसको बीच में नहीं छोड़ सकते है) करा रहे थे। पर एक रात्रि को अचानक उनका कालधर्म हो गया। मृत्यु उपरांत वे देव हुए। तुरंत ही अवधि-ज्ञान का उपयोग रखा। क्रिया कराने वाले वे सिर्फ एक ही थे। और अब खुद काल कर चुके थे, तो शिष्यों का क्या होगा? इस चिन्ता से शिष्यों के प्रति की करुणा से उन्होंने अपने ही शरीर में दिव्य शक्ति से प्रवेश कर लिया। शिष्यों को इस बारे में कोई कल्पना तक नहीं थी। वे देव अब साधुवेश में आ गए। साधुत्व की सारी क्रियाएँ एकदम शुद्ध तरीके से करते थे, फिर भी सर्वविरति के परिणाम नहीं आए।

पक्षी को उड़ने की कला का, मछली को तैरने की कला का क्षयोपशम हो ही जाता है। यह सब भव का कर्मों पर हो रहा असर है।

इस प्रकार इन द्रव्यादि पांच चीजों की असर हमारे कर्मों पर होती है। इसीलिए जब किसी मुमुक्षु को दीक्षा लेनी हो तो स्थिरहस्त, लब्धिसंपन्न आचार्य-भगवंत के हाथों से रजोहरण मिले, जहाँ अशोक वृक्ष आदि की उपस्थिति हो ऐसे प्रशस्त क्षेत्र में दीक्षा मिले, मंगल दिन, मंगल घड़ी, मंगल मुहूर्त

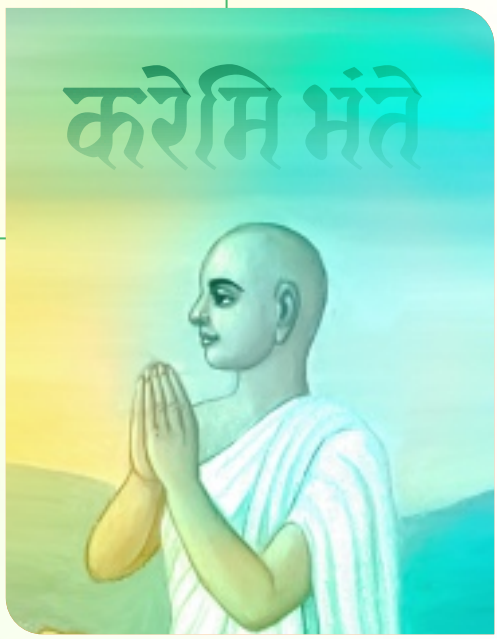

पर संयमवेश और रजोहरण की प्राप्ति और लोच एवं 'करेमि भंते' का उच्चारण होता है। खुद के उछलते भाव हो, आस-पास की हजारों की मेदनी का शुभ भाव हो, शुभ आशीर्वाद हो, उन भावों में ज्यादा शुभता घुलती जाये, उसके लिए देववंदन, नंदीसूत्र श्रवण यानी कि शुभ भावों की तीव्रता के अनुभव के साथ सर्वविरति की प्राप्ति हो। इन सभी बातों को महत्व दिया जाता है।

और हाँ! यह सब कुछ सिर्फ मानव भव में ही सम्भव है, अन्य किसी भी गति में नहीं! इन सभी की मुमुक्षु के प्रत्याख्यानावरण कषाय रूप चारित्र मोहनीय कर्म पर ऐसी असर पड़ती है कि जिससे उसका क्षयोपशम होता है। (मुमुक्षु को भावचरित्र की प्राप्ति होती है।) यह क्षयोपशम स्थिर हो जाता है, निर्मल हो जाता है, आजीवन टिके रहता है, और मुमुक्षु अपनी अंतिम साँस तक सुंदर संयम का पालन कर सकता है।

हमें इन पांचों में से मुख्यतया भावों का कर्मों पर जो असर होता है, उसे देखना है।

जब हम शुभभावों में झूल रहे होते है, तब उन शुभभावों का हमारे कर्मो पर मुख्य 8 प्रकार से असर पड़ता है :

1. नये-नये पुण्यकर्मों का बंध होता है।
2. पुराने बाँधे हुए और वर्तमान सत्ता में जो पापकर्म होते हैं उनके थोड़े अंश का नये बंध रहे पुण्य में संक्रमण (Transfer) होता है।
3. जो पुण्यकर्म बँधते हैं; वे और ज्यादा पावर वाले बँधते हैं।
4. कुछ पाप ऐसे होते हैं कि जो पुण्यकाल में भी साथ-साथ बँधते ही रहते है, पर वे मंद रस वाले बँधते हैं।
5. पुण्यकर्म उदय में आते हैं, आने की सम्भावना बढ़ती है।
6. जो पुण्यकर्म उदय में हैं और जो नये आ रहे हैं उन पुण्यकर्मों का पावर बढ़ जाता है।
7. पापकर्मों का उदय स्थगित हो जाता है, होने की सम्भावना बढ़ती है।
8. जिन पापकर्मों का उदय चालू है उनका पावर घट जाता है।

इसी तरह अशुभ भावों का भी हमारे कर्मों पर मुख्य 8 प्रकार से असर होता है:

1. नये-नये पाप कर्म बँधते हैं।
2. पुराने बाँधे हुए और वर्तमान में सत्ता में जो पुण्यकर्म होते है; उनके थोड़े अंश का नये बँध रहे पाप में संक्रमण होता है, अर्थात उतना हिस्सा अब पाप रूप बन जाता है।
3. जो पापकर्म बँधते हैं, वे और ज्यादा पावर

वाले बंधते हैं।

4. कुछ पुण्य ऐसे होते हैं कि जो पापकाल में भी साथ-साथ बँधते ही रहते है, पर वे मंद रस वाले बँधते हैं।
5. पापकर्मों का उदय होता है, होने की सम्भावना बढ़ती है।
6. जो पापकर्म उदय में हैं, और जो नये आ रहे हैं, उन पापकर्मों का पावर बढ़ जाता है।
7. पुण्यकर्मों का उदय स्थगित हो जाता है।
8. जिन पुण्यकर्मों का उदय चालू है उनका पावर घट जाता है।

तो शुभ भावों में ही रहने जैसा है ना! अशुभ भाव करने जैसे नहीं हैं ना!

हम सभी को संकल्प करना चाहिए कि,

परिस्थिति चाहे जो भी आ जाये, मैं मेरे भावों को 'शुभ' रखने के लिए जी जान लगा दूँगा, पर अशुभ नहीं बनने दूँगा।

इस प्रकार, हमने कर्मों पर द्रव्यादि पांच चीजों की और मुख्यतया भावों की जो असर होती है उसे देखा।

अब हम हमारे विषय पर बात करते हैं।

लोगों का अनुभव है कि अनीति करने से पैसा मिलता है, और प्रभु कहते हैं कि अनीति से अंतराय खड़े होते हैं। तो इन दोनों में सच क्या है?

एक बात फिर से याद कर लेते हैं, कि:

'सुखं धर्मात् दुःखं पापात्'

अनीति तो पाप है, उससे पैसे का सुख मिल सके, यह कदापि संभव नहीं है। पैसा तो पुण्य से ही मिलता है। इसीलिए अनीति करके पैसा मिल जाता है, ऐसे अनेक अनुभव अवश्य होते हैं, किन्तु जब ऐसे आदमी का पुण्य खत्म हो जाता है, तब वह अनीति पैसा नहीं दिलाती, पर जेल की सलाखें दिलाती हैं।

जब तक पुण्य बैलेन्स में है, तब तक जीव उसे किस तरह उदय में लाता है? यह महत्वपूर्ण है। नीति, प्रामाणिकता को बरकरार रखकर भी (व्हाईट चैक से भी) उसे उदय में लाया जा सकता है। और अनीति से भी (ब्लेक के पैसे से भी) उदय में लाया जा सकता है। वह पुण्य जब उदय में आता है तब जीव को पैसा मिलता है। नीति-प्रामाणिकता के लिए धैर्य रखना पड़ता है। अनीति से काम तत्काल हो जाता है। (यह पंचमकाल का दुष्प्रभाव है) पर अनीति अशुभ भाव है। वह उदय में आये हुए पुण्य के पावर को तोड़ देती है। मतलब कि यदि किसी व्यक्ति को ऐसा पुण्य उदय में आया है कि, यदि उसे अनीति, विश्वासघात आदि का अशुभ भाव नहीं होता तो उसे 10 लाख रुपये मिल सकते थे। पर जीव ने अनीति की, इसलिए पुण्य की हानि हुई, पुण्य का पावर टूट गया। इसलिए जीव को सिर्फ 1 लाख मिले, पर उसके पुण्य के बैलेन्स से 10 लाख का पुण्य खर्च हो गया / Debit हो गया। बाकी के 9 लाख की प्राप्ति होने में अंतराय हुआ ना? पर पुण्य की बैलेन्स से 10 लाख का पुण्य Debit हो गया है।

अनीति के अशुभ भाव से उसको क्षति पहुँची और उससे उसका पावर टूटकर 1 लाख के जितना ही हो गया। इस हकीकत का जीव को पता ही नहीं चलता, वह तो 'अनीति करने से उसे 1 लाख रुपये मिले हैं' इतना ही समझता है, इतना ही देखता है। इसलिए अनीति से पैसा मिलता है ऐसा बोलता है। पर प्रभु अपने केवलज्ञान में ऊपर की सारी हकीकत देखते हैं, जानते हैं, इसलिए प्रभु अनीति से 9 लाख का अंतराय हुआ है ऐसा कहते हैं।

यह तो जो अंतराय तत्काल हुआ, सिर्फ उसकी बात हुई। अनीति के अशुभ भाव से नया पाप, और वह भी ज्यादा पावर वाला पाप बँधता है। कालान्तर में जब वह उदय में आयेगा तब जीव को, यदि उसने लाख रुपये की अनीति की हो तो कम से कम 10 लाख का तो फटका पड़ेगा ही। जीव के अनीति के परिणाम ज्यादा संक्लिष्ट होते हैं। अपने पिता के साथ, सगे भाई के साथ, या किसी भी व्यक्ति के साथ अनीति की हो, तो ज्यादा संक्लेश होने के कारण ज्यादा तीव्र पाप बँधता है। 30-40 लाख का या करोड़ों का भी नुकसान करवा सकता है। यह है अनीति का भावी दुष्परिणाम।

इस प्रकार अनीति से वर्तमान में अंतराय आता है, और भविष्य में दारुण दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इसलिए हर आत्मार्थी को अनीति का त्याग करना चाहिये।

जिस तरह अनीति से आत्मा का अहित होता है, उसी तरह नीति से कमायी हुई संपत्ति पर भी मूर्च्छा और ममता करने से भी आत्मा का अहित होता है। मम्मण सेठ के जीवन में हिंसा आदि कोई पाप नहीं थे, कि जो उसे सातवीं नरक में ले जाये। पर अपनी अमाप संपत्ति की अत्यधिक मूर्च्छा उसे सीधे सातवीं नरक में ले गई। संपत्ति को उसने जरा भी भोगा नहीं था फिर भी उसकी दुर्गति हुई।

संपत्ति तो शालिभद्र को भी बहुत मिली थी, उसने तो उसे भोगा भी था। फिर भी उसकी आत्मा का अहित नहीं हुआ। क्योंकि उसने उस संपत्ति में स्वामित्व भाव की कोई मूर्च्छा नहीं रखी थी।

अर्थात्, धन की मूर्च्छा से आत्मा का अहित होता है इसलिए इसे तोड़ने के लिए दानधर्म का उपदेश दिया जाता है। और दान, शील, तप और भाव, इन चारों धर्मों में अपेक्षा से दानधर्म का पालन करना आसान है। धन्ना सार्थवाह आदि की तरह दानधर्म के द्वारा धर्म में प्रवेश करना सुलभ होता है। इस कारण भी महात्मा दानधर्म का उपदेश देते हैं।

हाँ! औचित्य तो सर्वत्र बनाये रखना होता ही है। अपना घर जलाकर दूसरों के घर दिया नहीं जलाना है। खुद निर्धन हो जाये उस तरह से दान देने का किसी ने भी नहीं कहा है। और प्रायः इस तरह से कोई दान देता भी नहीं है।

बाकी तो जो श्रीमंत और धनवान लोग दान नहीं देते, उनके जीवन में या तो मम्मण ब्रांड धन की कातिल मूर्च्छा होती है या भयंकर विषय-विलास होता है। ये दोनों जीव का सत्यानाश करने वाले हैं, इसलिए धनिकों के लिए दानधर्म ही शरण है।

अस्तु।

आत्मा स्वयं है, स्वयंभू है, वो ही प्रभु है।

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

परमात्मा देह को संयोग के रूप में धारण करते हुए भी
स्वरूप से देह को धारण नहीं कर रहे थे।
धारण करने के लिए धारणा चाहिए,
और धारणा उसकी की जाती है, जो कभी अपरिचित रहा हो,
या कभी अपरिचित हो जाता हो।
जो 'स्वयं' नहीं है उसकी धारणा होती है,
'स्वयं' की धारणा है तब तक 'स्वयं' नहीं है,
और जब 'स्वयं' है तब धारणा नहीं,
देखा-देखी की बात है, प्रत्यक्ष अनुभव है।

प्रभुवीर गर्भ से निष्क्रांत हुए अब कुछ पल ही हुए थे,
एक शरीर में से दूसरा शरीर निकला था,
लेकिन उसमें जो था वह जानता था कि मैं शरीर नही हूँ
शरीर से शरीर पैदा किया जा सकता है, आत्मा नहीं...
आत्मा स्वयं है, स्वयंभू है, वो ही प्रभु है।

प्रभु की नवजात देह रत्न की भांति दिप्तिमंत थी,
कमल की तरह कोमल थी, पूर्ण अंगोपांग से युक्त थी,
मानो कि समस्त पुण्य का पुंज थी।

उस देह को, जो अभी-अभी गर्भमुक्त हुआ था,
उसे मन्द मन्द पवन की लहरों का स्पर्श हुआ,
और देह के भीतर जो चैतन्य था, उसे ज्ञात हुआ कि
मुझे नहीं, देह को पवन का स्पर्श हुआ है,
वातावरण सुरभि था, सुगन्धमय परमाणुओं से व्याप्त था,

घ्राणेन्द्रिय के संपर्क से मन को आह्लादित कर रहा था,
पुद्गल से पुद्गल को लाभ हानि होती है,
प्रभु सिर्फ निर्लेप और निर्दोष भाव से सिर्फ ज्ञाता रूप ही रहे।
गर्भ से जन्म, यह बड़ा परिवर्तन है,
गर्भ में सब बंद, जन्म में सब खुला
गर्भ में खान-पान आदि सभी क्रियाए परतंत्र,
जन्म के बाद स्वतंत्रता आ जाती है।

किंतु प्रभु ये सारे परिवर्तन अपने में नहीं,
वरन् शरीर में देख रहे हैं,
अपने आप में तो कोई परिवर्तन नहीं देखा प्रभु ने...
आप तो आप ही रहे, जो बदलाव हुआ वह
बदल जाने वाले में हुआ,
और बदल जाने वाला वह है, जो पराया है।

प्रभु वीर का नवनिष्क्रांत किसलयसा देह
स्वयं श्वसित होने लगा,
प्राण-ऊर्जा बाहर से भीतर, भीतर से बाहर आने-जाने लगी,
सांसो की यह उत्पाद व्यय की श्रृंखला
आम आदमी को भ्रमित कर देती है
कि जीवन ध्रुव है।

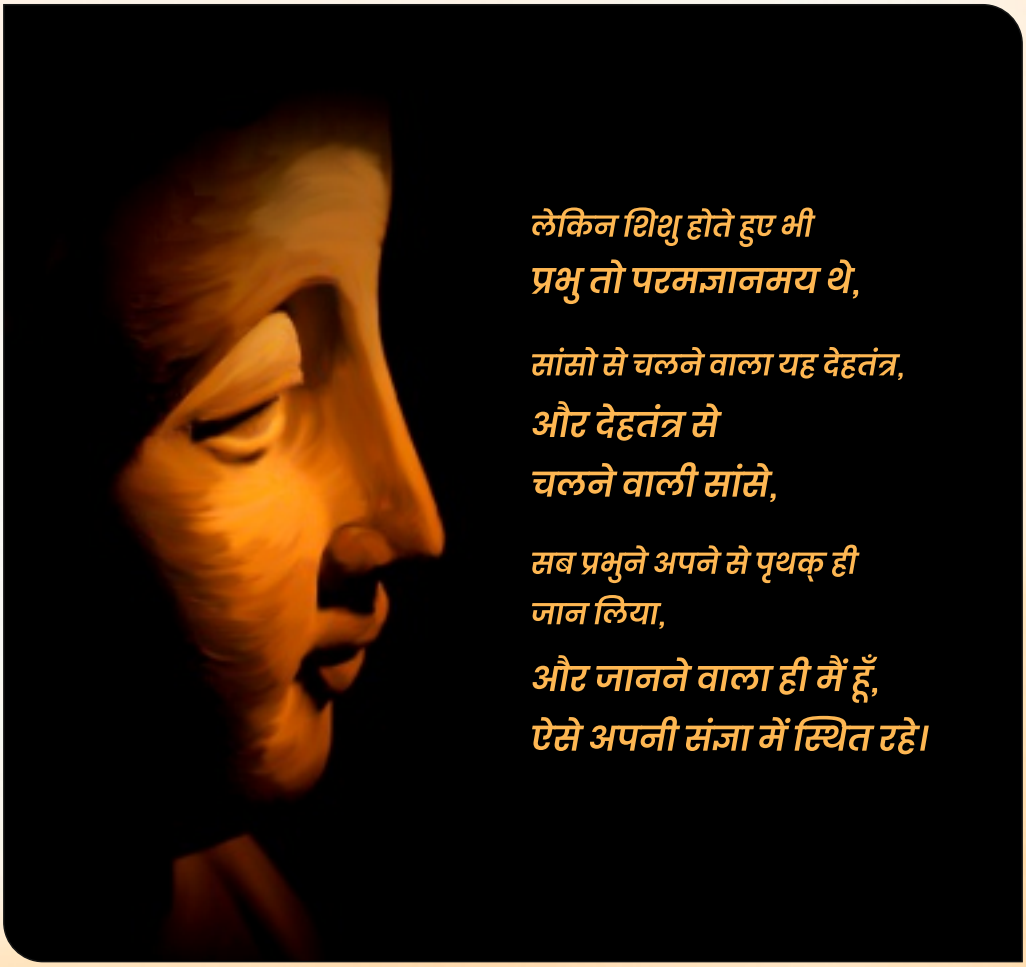

Everything is Online, We are Offline 8.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

माइक्रोचिप के बारे में विगत कई महीनों से लिखे आलेखों के बीच इस महीने आई एक खुशखबरी से आपको अवगत कराना चाहूँगा।

अमेरिका का इण्डियाना 11वां स्टेट बन गया है, जिसने अपने राज्य में माइक्रोचिप को प्रतिबंधित कर दिया है। इससे पहले 1. आर्कन्सास 2. केलिफ़ोर्निया 3. मसूरी 4. मोन्टाना 5. नेवाड़ा 6. न्यू हैम्पशायर 7. नॉर्थ डाकोरा 8. ओक्लाहोमा 9. उराह 10. वीस्कोंसीन ऐसे 10 स्टेट अपने यहाँ RFID (माइक्रोचिप) को अवैध घोषित कर चुके है।

हुआ यूँ कि, कुछ निजी कंपनियों ने अपने वर्कर्स को नौकरी के लिए माइक्रोचिपिंग अनिवार्य कर दिया था, जिसके कारण अनेक कर्मचारियों ने नौकरी छोड़ना पसंद किया था, बजाय माइक्रोचिप अपने हाथ में लगवाना।

हजारों लोगों की नौकरियाँ कंपनियों की दादागिरी के कारण जब जाने लगी तो मामला शीर्ष अदालतों में भी पहुँचा और आखिरकार कोर्ट के आदेश से इन 11 राज्यों में माइक्रोचिपिंग बंद करना पड़ा।

कंपनी का कहना था कि माइक्रोचिप का उपयोग सिर्फ कंपनी की केन्टीन में खाना ऑर्डर करने, हाजरी लगाने और कंपनी की बिल्डिंग में काम करने में ही हो रहा है। मगर कानूनविदों ने जब पूछा कि, काम खत्म होने के बाद घर पर रह रहे वर्कर्स का डाटा कौन उपयोग में ले सकता है, और इसका फायदा कौन उठा सकता है?

तो इसका जवाब कंपनी वाले नहीं दे पाये। आखिर कंपनी वाले बेकफूट पर आ गये। यदि इसी तरह पूरा विश्व जग जाएगा तो इन लोगों की

योजनाएँ ध्वस्त हो जाएगी।

दूसरी महत्त्वपूर्ण जानकारी भी आपसे शेयर करना चाहूँगा। जून, 2019 में स्वीट्जरलैंड की सरकार ने 2000 लोकेशन पर 5G के एन्टेनास को टावर पर लगा दिये। 2000 लोकेशन पर लगाने के पश्चात् उन टावरों के आजू-बाजू रहने वाले लोगों की दिक्कतें अप्रत्याशित रूप से बढ़ गईं।

- कानों में तेज-तेज रिंगिंग बेल बजने की आवाज सुनाई देने लगी।
- इन्टेन्स हैडेक (भयानक सरदर्द)
- कानों में असहनीय दर्द
- बेचैनी
- थकावट
- Insomnia

ऐसी-ऐसी समस्याओं से पूरे के पूरे परिवार, कोलोनी, एरिया के अनेक लोगों की दौड़ डॉक्टर्स की ओर चालू हो गई।

सभी प्रकार के टेस्टिंग का एक ही नतीजा आया। सभी डॉक्टर्स का यही कहना था कि, 5G में से निकले माईक्रोवेक्स अथवा EMF (Electro Magnetic Field) के कारण ही ये सारी समस्याएँ पैदा हुई हैं।

आखिरकार लोगों ने ओथोरिटिज को कॉल किया तो वहाँ से जवाब मिला, हम 5G को बंद नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यह सब कुछ लीगल (अधिकृत) है और कायदे के विरुद्ध हम कुछ भी नहीं कर सकते।

इसे Legal Mass Genoside (अधिकृत सामूहिक नरसंहार) नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे?

October 2019 आते-आते तो स्वीट्जरलैंड में भयानक विरोध और आंदोलन शुरू हो गये। हजारों की तादाद में लोग स्विस पार्लियामेंट तक पहुँचने लगे। सरकार को भी आखिर झुकना पड़ा और फरवरी 2020 आते-आते स्विस सरकार को 5G एन्टेना के काम पर रोक लगानी पड़ी।

यूरोप-अमेरिका जैसे हर बड़े विकसित देशों में वैज्ञानिकों एवं डॉक्टर्स ने मिलकर अपने देशों के प्रमुखों को पत्र लिखकर 5G नेटवर्क के प्रयोगों को तुरंत बंद कर देने का अनुरोध किया है।

ब्रसेल्स एवं बेल्जियम 5G पर रोक लगाने वाले प्रथम देश बन गये है। [Devonshire, U.K. halts the installation of 5G over serious health concerns]

आपको प्रश्न उठेगा कि, आखिर सरकार इसे इतना हानिकारक जानने के बावजूद क्यों अनुमति दे रही है?

अमेरिका की ही बात देख लेते हैं। सन् 1998 से सन् 2018 तक टेलिकम्युनिकेशन की चार बड़ी-

बड़ी कंपनियाँ, 1. AT&T 2. Verizon 3. Comcast 4. Charter और दूसरी टेलीकॉम कंपनियो ने लोबींग (समर्थन जुटाव) के लिए सरकार की जेब में 1.2 बिलीयन डॉलर्स डाले।

अकेले सन् 2018 में ही 80 मिलियन डॉलर्स इस के लिए खर्च किए गये।

अपनी फेवर में पोलिसी बनाने के लिए फार्मा कंपनी सबसे ज्यादा पैसे खर्च करती रही है, मगर अब इस में टेलीकॉम कंपनियाँ भी जुड़ चुकी हैं।

मोबाइल रेडिएशन (विकिरण) की सबसे बुरी असर 5 साल तक के बच्चों के दिमाग पर पड़ती है। इसी के चलते 2015 में फ्रांस की सरकार ने सभी नर्सरी स्कूलों में Wi-Fi को प्रतिबंधित कर दिया था।

और एक स्टडी पर गौर करने जैसा है। विगत 40 सालों में अमेरिका, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन इत्यादि विकसित देशों में Male sperm count (पुरुष वीर्याणु) बहुत कम होते जा रहे हैं, और मोबाइल क्रांति (रेडिएशन क्रांति) भी विगत 40 साल से ही बढ़ती रही है।

Central European journal of urology की एक स्टडी यहाँ पर प्रस्तुत है। 32 पुरुषों का Group-A और 32 पुरुषों का Group-B बनाया गया। दोनों ग्रुप के स्पर्म काउन्ट को लेकर 5 घंटे तक इनक्यूबेशन में रखा गया। ग्रुप-A में कोई भी रेडिएशन नहीं दिया गया मगर ग्रुप-B में विर्याणु को रेडिएशन दिया गया। मोबाइल टोप मोड पर रखा गया।

दो परिणाम स्पष्ट रूप से देखने में आये, 1) ग्रुप-A के विर्याणु की तुलना में ग्रुप-B के वीर्याणु में वृद्धि बहुत ही कम हो गई। 2) ग्रुप-A के वीर्याणु में DNA बिल्कुल भी विभाजित नहीं हुए मगर

ग्रुप-B के विर्याणु में DNA fragmentation बहुत ज्यादा हुआ।

बातें सिर्फ 5G की ही नहीं है। बातें उन से आने वाली अनेकविध समस्याओं की भी है। रेडिएशन और EMF (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक फील्ड) के अनेक दुष्परिणाम सामने आ चुके है। मोबाइल पैंट की जेब में रखे तो बांझ होने का खतरा, शर्ट की जेब में रखे तो दिल को नुकसान और कान पर लगा के बात करें तो दिमाग को हानि पहुँचना तय है। कईं लोग तो सोते वक्त भी मोबाइल नजदीक रखते हैं जैसे एक माँ छोटे बच्चे को साथ लेकर सोती है, वैसे ही मोबाइल को प्यार से साथ लेकर सोते है।

मोबाइल से मिलने वाली सुविधा की गद्दी में नींद भले ही अच्छी आ रही हो, मगर सभी नींद अच्छी नहीं होती है। जागना अनिवार्य है।

जब जागना जरूरी हो,

तब देर से जागने वाले के पास सिर्फ पछतावा ही बचता है, और कुछ भी नहीं।

अनोखी अस्मिता

"प्रियम्"

अस्तित्वाभिमान /

I am something. यह अस्तित्वाभिमान है। मैं कुछ हूँ, दिमाग के इस भूसे से (पारे से) जमीन से ऊपर चलने वाला इंसान एक कच्ची सैंकड़ में गर्मागर्मी कर बैठता है। वस्तुपाल का क्या अस्तित्व था उसका मरणोत्तर प्रमाण भी बहुत अद्भुत है।

उसकी मृत्यु से वृद्धगच्छ के अधिपति पू. आ. श्री वर्धमानसूरिजी को ऐसा सदमा लगा कि जैसे शासन का पूरा स्तंभ गिर पड़ा हो। वैसे तो उनको कुछ भी वापरना नीरस ही हो गया था, पर इस प्रकार जीवन का अंत नहीं ला सकते थे, इसलिए उन्होंने आयंबिल का उग्र तप शुरु किया। अखंड आयंबिल।

मैं आपको पूछता हूँ, आपके जाने के बाद आप के निकटतम स्वजन भी आयंबिल करेंगे? अरे! आयंबिल की बात तो दूर है, होटल भी छोड़ सकेंगे? अरे! मनपसंद की एकाध चीज भी छोड़ देंगे? पूरी जिंदगी जिन स्वजनों को आप अपने मानकर चलते हैं, उनमें आप का है कौन? पूरी जिंदगी जिस संघ को आप पराया मानकर चलते हैं, यही हकीकत में आपका स्वजन होता है।

I am something.

सर्वे सत्वा मिथः सर्व- सम्बन्धान् लब्धपूर्विणः।
साधर्मिकादिसम्बन्ध-लब्धारस्तु मिताः क्वचित् ॥

इस संसार में ऐसा एक भी संबंध नहीं है, जो हमारा सभी जीवों के साथ न हुआ हो। हमारे सभी के साथ माँ-बाप, पति-पत्नी, पुत्र-मित्र आदि सारे संबंध हो चुके हैं। नहीं हुआ तो एक साधर्मिक के साथ का संबंध। ऐसे प्रकार के संबंध विरल ही होते हैं।

संघ की अवगणना करके स्वजनों के पीछे भागने की चेष्टा, यह गंगा को छोड़कर मृगजल के जल के पीछे दौड़ने की चेष्टा है। स्वजन बैल के समान है, जिसे पूरी जिंदगी दोहने की जद्दोजहद करने के बाद सिर्फ लात ही मिलने वाली है। संघ, कामधेनु

गाय है, जो सर्व मनोकामना पूरी कर सकता है। स्वजनमोह सर्व अनर्थ का मूल है। संघ वात्सल्य सर्व कल्याण का कंद है। हमें क्या करना चाहिये, यह हमें तय करना है।

जिसके पीछे आप पूरी जिंदगी खर्च कर डालो, उनको आपकी जीते जी भी परवाह नहीं है। तो आपके जाने के बाद की तो बात ही कहाँ करनी?

विचार कीजिए कि वस्तुपाल का क्या अस्तित्व रहा होगा कि एक गच्छाधिपति उनके मृत्यु के बाद आजीवन अखंड आयंबिल तप शुरू कर दे। एक श्रावकत्व की इससे ज्यादा हाइट का प्रूफ और क्या होगा?

हमारा अस्तित्वाभिमान इसलिए ही टिका है, कि हमारे पास हमारे अस्तित्व के तात्त्विक विचार ही नहीं है।

अनोखी अस्मिता /

पू. आ. श्री वर्धमानसूरिजी के आयंबिल बहुत लंबे समय तक चले। वृद्धावस्था और घोर तप, इन दोनों का मिलन हुआ। संघ पारणा करने के लिए आग्रह करने लगा। परंतु वस्तुपाल की सताती हुई स्मृति उन्हें पारणा करने के लिए सहमत नहीं होने दे रही थी। आखिर में संघ के अत्यंत आग्रह से शंखेश्वर तीर्थ में दादा के दर्शन करने के बाद पारणा करने के लिए पूज्यश्री सहमत हुए।

संघ के साथ पूज्यश्री ने प्रयाण किया। परंतु रे भवितव्यता! शंखेश्वर पहुंचने से पहले ही पूज्यश्री का शंखेश्वर दादा के ध्यान में कालधर्म हो गया। मृत्यु के पश्चात् वे देव बने, अपना पूर्व भव देखा। वस्तुपाल के प्रति अहोभाव वहाँ भी जागृत हुआ।

पराकाष्ठा के अस्तित्व के साथ अस्तित्वाभिमान शून्यता, यानी वस्तुपाल।

वैरागी पूज्यों के भी अनुराग के पात्र बनने वाली अस्मिता, यानी वस्तुपाल।

पाचन /

पैसा सामान्यतः इंसान के दिमाग को खराब कर देता है। आज के कहे जाने वाले श्रीमंत जिनकी तुलना में दरिद्र लगे ऐसे वस्तुपाल के पास जो गुणपरिणति थी, वह हकीकत में आश्चर्यजनक थी। जिसके मूल में था संघ बहुमान। यदि ऐसी गुणपरिणति ना होती तो बाह्य दृष्टि से शासन के कार्य करने पर भी वस्तुपाल इस वैभव और पद को हजम नहीं कर पाते।

असली प्रश्न आप को अमृत मिला है या जहर उसका नहीं है? असली सवाल इतना ही है, कि आपने क्या पचाया?

याद आती है वो कविता:

पचा सको तो अमृत से कम नही है वो भी,
अमर हो गये शंकर जग में हलाहल से.....!

स्थानांग आगम सूत्र कहता है कि, यदि गुण-परिणति नहीं है तो संयम पर्याय, शिष्य परिवार, और श्रुत संपत्ति सब कुछ होने पर भी यह आत्मा के लिए अनर्थकारी बनता है। आर्थिक दृष्टि में आगे बढ़ने के हमारे प्रयास होते हैं, हमें जो पसंद हो उस आराधना में आगे बढ़ने के भी हमारे प्रयास होते हैं, किन्तु क्या गुण-परिणति पाने की तात्विक इच्छा हम में है?

वैभव और राजसम्मानों में झूलते हुए भी वस्तु-पाल के अंतर में गुणपरिणति का झरना निरंतर बहता रहता था। बाह्यभावों से वे अलिप्त थे। उनका मन आंतर भावों में डुबकी लगाया करता था। और उनकी इच्छा ऐसी थी, कि कभी भी आंतर भावों से उनको बाहर ही ना निकलना पड़े।

साधना की प्यास /

इतने Giant साम्राज्य, Giant व्यवस्था और Giant समृद्धि के बीच भी वस्तुपाल बार-बार स्वाध्याय मग्न बन जाते थे। उनके लिखे हुए ग्रंथ आज भी मांडल के जिनालय में उपलब्ध हैं।

वस्तुपाल के दो प्रार्थना श्लोक हैं जो उनकी आंतर परिणति के प्रतिबिंब जैसे हैं।

कैसा था उनका अस्तित्व? कैसे थे उनके मनो-रथ? क्या थी उनकी तमन्ना? अंदर से वे कैसी फीलिंग्स में खेलते थे, यह सब इन श्लोक से पता चलता है।

मेरे बहुत प्रिय हैं ये दो श्लोक:

संसारव्यवहारताऽरतमति-र्व्यावर्तकर्तव्यता-
वार्तामप्यपहाय चिन्मयता, त्रैलोक्यमालोकयन्।
श्री शत्रुञ्जयशैलगुह्यगुहा-मध्ये निबद्धस्थितिः,
श्री नाभेय! कदा लभेय गलित-ज्ञेयाभिमानं मनः।

दादा आदीश्वर! मेरा ऐसा दिन कब आयेगा कि संसार के सारे व्यवहार में मन नहीं रहेगा,

प्रवृत्ति-निवृत्ति की बात तक नहीं रहेगी,
मैं पूर्णतः ज्ञानमय बन जाऊँ,
मैं तीनों लोक को ज्ञानस्वरुप देखूँ।
बस, शत्रुंजय की एक गहन गुफा में मैं बैठा हूँ,
ना मेरे मन को और कुछ जानना हो,
ना ही उसे कोई अभिमान हो।

वस्तुपाल सांसारिक युद्धों के कार्यों से लेकर, धार्मिक, तीर्थ निर्माण तक के सारे ही कार्य करते थे। पर इन सभी के साथ-साथ उनकी स्वाध्याय-धारा चालू थी। उनकी साधना की अभिलाषा बरकरार थी। भीतर से वे साधक थे। सर्वविरति के लिए तरसते थे।

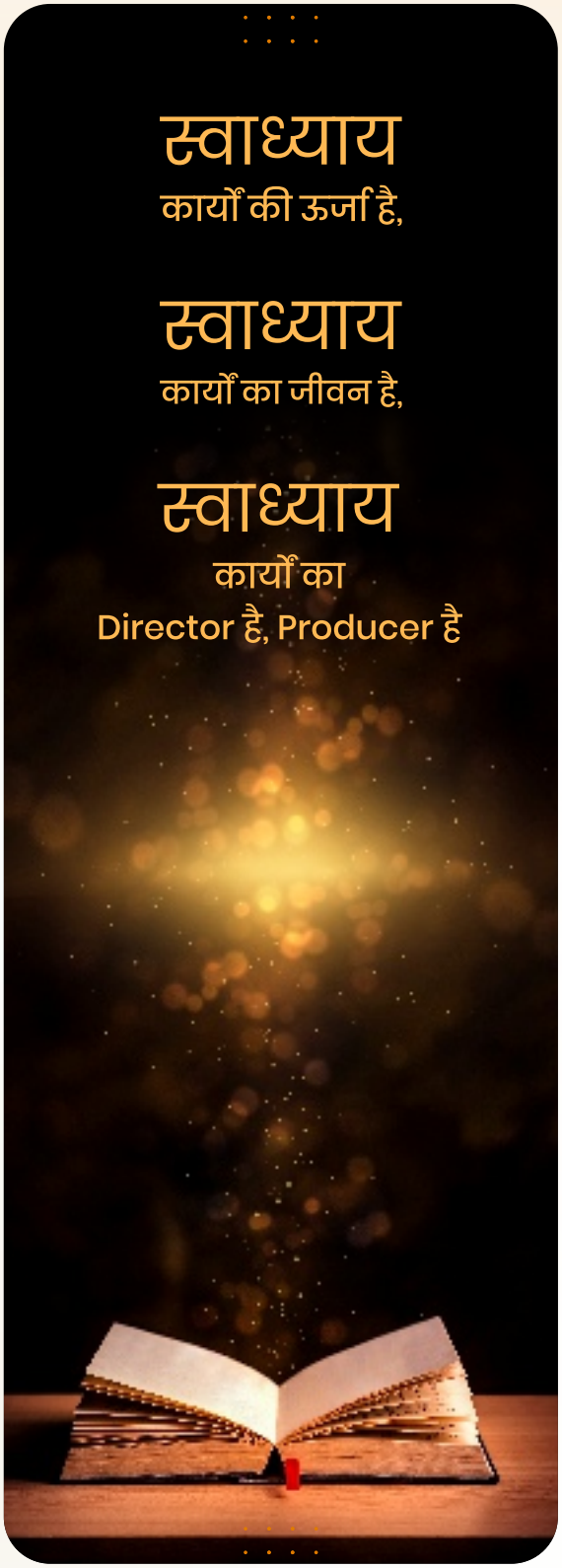

स्वाध्याय /

बिना स्वाध्याय के संघ के कार्य सम्यकता से नहीं किए जा सकते। जिसके पास स्वाध्याय नहीं है, वह आखिर में थक जाता है। स्वाध्याय कार्यों की ऊर्जा है, स्वाध्याय कार्यों का जीवन है, स्वाध्याय कार्यों का Director है, Producer है, और स्वास्थ्य कार्यों का सहायक है।

स्वाध्याय अच्छा नहीं लगता, कार्य अच्छे लगते हैं। इसका अर्थ यह है कि, थियरी अच्छी नहीं लगती प्रैक्टिकल अच्छे लगते हैं। हमारे पास दलील भी है, कि मेईन तो प्रैक्टिकल ही है ना? पर हम भूल जाते हैं कि थिअरी के बिना प्रैक्टिकल होते ही नहीं है।

आपको संघ की सेवा करनी है, तो आप प्रतिदिन ठोस स्वाध्याय कीजिए। गीतार्थ गुरु भगवंतों की वाणी श्रवण, या वाचन के रूप में हर रोज दो घंटे का समय आपको मिलता होगा। इससे सेवा शुद्ध होगी, संघ और आप की आत्मा के पक्ष में लाभ होगा।

इतना करने के साथ-साथ निरंतर सर पर गुरु होने चाहिये। दो घंटे के स्वाध्याय से गीतार्थ नहीं बन जाते। अनजाने में अनादि के दोषों से या छद्मस्थता से थोड़ा-बहुत जानकर हम कुछ गड़बड़ कर दें, ऐसी पूरी संभावना है। या तो एक गुरु के प्रति, या जब भी नजदीक में जो सविग्न गीतार्थ गुरु भगवंत हो, उनके प्रति पूर्ण समर्पण भाव रख सकेंगे, तो ही आप संघ की सेवा कर सकेंगे।

गोडीजी का इतिहास - 2

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

आक्रमण और उत्थापन

सभी का श्वास थम सा गया था।

हृदय के धड़कनों की गति बढ़ती जा रही थी।

जैसे-जैसे समाचार सुनने में आ रहे हैं, वैसे-वैसे सभी भय से काँप रहे थे।

तुर्क देश का बादशाह हुसैन खान सिन्ध की ओर से अत्यन्त बलशाली सेना के साथ भारत वर्ष में "मारो! काट डालो! किसी को मत बख्शो!" के नारे के साथ एक से एक राजा-महाराजाओं को बेरहमी के साथ हराते हुए कच्छ, चोरवाड़, खेतार, जेन्तार आदि छोटे-बड़े राज्यों पर कब्जा करते हुए आगे बढ़ रहा था।

पाटण गुजरात की राजधानी थी, और पाटण की गद्दी पर बैठने के मनसूबे रचते हुए हुसैन खान पाटण की ओर अपनी बलशाली सेना के साथ आगे बढ़ रहा था।

पूरे पाटण में सन्नाटा फैला हुआ था।

पाटण में सुबा हस्तक दिल्ली सल्तनत का शासन था।

दिल्ली में बैठे हुए बादशाह फ़िरोजशाह तुगलक को गुजरात में चल रही सभी गतिविधियों से सुबा ने वाकिफ तो कर दिया। लेकिन...

हाल ही में वार्धक्य एवं निर्बलता के कारण बादशाह की मौत हो गई।

बादशाह की मृत्यु होते ही उसके वारिसों में सत्ता स्थापित करने के लिए आपसी लड़ाई चरमसीमा में पहुँच गई थी।

मोहम्मद खान तुगलक को दिल्ली के गद्दी पर बैठकर कुछ दिन ही हुए होंगे कि ग्यासुद्दीन तुगलक द्वितीय ने उसकी हत्या करके दिल्ली की गद्दी को हासिल कर लिया।

फ़िरोजशाह तुगलक

लेकिन उसका इतना वर्चस्व न होने के कारण कोई अमलदार उसके आदेश को नहीं मानते थे।

तुर्की का हुसैन खान इस बात से अच्छे से वाकिफ था, इसलिए वह इन हालातों का फायदा उठाना चाहता था। इसलिए वह पूरे जोश और ताकत के साथ पाटण पर चढ़ाई करने के लिए आ रहा था।

और यहाँ...

पाटण के सुबा ने युद्ध के लिए पूरी तैयारी कर ली थी। पूरी सेना और सेनापतियों को आगाह कर दिया था। जब हुसैन खान ने पाटण को चारों ओर से घेर लिया, तब सुबा ने रणदुंदुंभि बजाकर युद्ध को प्रारंभ करते हुए हुसैन खान की सेना पर हमला बोल दिया। दोनों सेनाओं में कईं दिनों तक घन-घोर युद्ध चला। और एक दिन युद्ध में चरमसीमा आई, और सुबा अपनी पूरी सेना के साथ अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर पूरे जोश के साथ आक्रमकता से हुसैन खान की सेना पर टूट पड़ा।

सुबा ने सीधे हुसैन खान पर तलवार से प्रहार किया।

लेकिन...

चालाक हुसैन खान ने अपने पर किये हुए प्रहार से खुद को बचाते हुए सुबा की तलवार को बीच में से ही उड़ा दिया, और शातिरी से अपनी कटार सुबा के पेट में भोंक दी। सुबा के सौ साल पूरे हो गए, सुबा धराशायी हो गया।

सुबा की मौत के बाद हुसैन खान पाटण का बादशाह बन गया।

दूसरी ओर...

युद्ध की परिस्थिति को देखते हुए खेतसिंह प्रभु पार्श्वनाथ की सुरक्षा के लिए अत्यन्त चिन्तित था।

हुसैन खान के कारनामे सुनकर खेतसिंह को भय सता रहा था कि "यह कट्टरपंथी क्रूर हुसैन खान जिनमन्दिर और जिनप्रतिमा का नाश करेगा। धर्मान्ध, धर्मद्वेषी मूर्तिभंजक तुर्की बादशाह प्रभु प्रतिमा को खंडित करेगा।"

चिन्ता की चिता में आकुल-व्याकुल हो रहे खेतसिंह को एक मार्ग सूझा, और उसने पाटण के संघ को एकत्रित किया।

संघजन, महाजन के समक्ष खेतसिंह ने प्रस्ताव रखा कि, "प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा की सुरक्षा इस परिस्थिति में यक्ष प्रश्न बन गया है। और बिना एक पल गंवाए हमें जल्द से जल्द इसका हल

निकालना ही पड़ेगा, एक पल की देरी भी हमें भारी मुश्किल में डाल सकती है।"

"आप सभी मिलकर प्रभु प्रतिमा की सुरक्षा का मार्ग बताएँ!"

खेतसिंह का यह प्रस्ताव सुनकर सभी विचारों की गहराई में डूब गए।

अनेक अभिप्रायों के पश्चात् भी किसी ठोस निर्णय तक नहीं पहुँच सके।

अन्ततः पीड़ित और विदीर्ण हृदय के साथ खेत-सिंह ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

"मुझे ऐसा लगता है कि जिनमन्दिर में से प्रभु प्रतिमा का उत्थापन करके सुरक्षित भूगर्भ में स्थापन कर देते हैं। फिर जो किस्मत में लिखा होगा वह तो होने वाला ही है।"

सभी ने खेतसिंह के विचार पर सकारात्मक अभि-प्राय देते हुए अपनी अनुमति दे दी। क्योंकि इसके सिवाय और कोई बेहतर तरकीब उन्हें भी नहीं सूझ रही थी।

अश्रुपूर्ण नयनों से आखिरी बार प्रभु पार्श्वनाथ की भक्ति करते हुए खेतसिंह ने प्रभु की उत्थापना की। और अपने भवन के तलघर में, भूगर्भ में निर्भयस्थान में प्रभुजी को प्रस्थापित कर दिया।

तत् पश्चात् किसी को पता न चले, इसके लिए उस भूगर्भ के ऊपर अनेक पत्थर आदि चीजें रख दी, और प्रभु की रक्षा के लिए क्षेत्रपाल से प्रार्थना की।

विक्रम संवत् 1432, ई. स. 1376 में प्रतिष्ठित हुए प्रभु पार्श्वनाथ,

विक्रम संवत् 1445, ई. स. 1389 के वर्ष में भूगर्भ में प्रस्थापित हो गए।

मात्र 13 वर्षों में अकल्पनीय घटित हो गया।

क्या पता अभी और कौन-कौनसी घटनाएँ आकार लेने वाली थीं?

भूगर्भ में से प्रभु पुनः कब जिनमन्दिर की शोभा बढ़ाएँगे?

देवताओं के द्वारा भूगर्भ में पूजे जाने वाले प्रभु के दर्शन पुनः कब होंगे?

पाटण से परदेश गमन, परलोक गमन

पाटण की पावनभूमि को अलविदा कहने का मन तो नहीं हो रहा था, किन्तु मुस्लिम शासकों की भयानक अराजकता के कारण खेतसिंह ने पाटण की मिट्टी को ललाट पर तिलक के रुप में चढ़ाते हुए, अपनी मातृभूमि को साष्टांग नमन करते हुए सीमोल्लांघन करके थरपारकर देश की ओर प्रयाण किया।

थरपारकर देश में सोढा जाति के राजपूतों का शासन था, अर्थात् वहाँ शान्ति और व्यवस्था का तन्त्र था, प्रजा सुखी थी।

थरपारकर देश में भूदेशर नगर की भव्यता अनोखी और अद्भुत थी।

श्रेष्ठीवर्यों के निवास से नगर की शोभा खिल उठी थी।

वहाँ सोढा जाति के खेंगारजी परमार राजा नीति-पूर्वक राज्य करते थे, और वडोरा गोत्र के काजल शाह वणिक प्रधान पद पर आरुढ़ थे।

काजल शाह के मृगादेवी नाम की धर्मनिष्ठ बहन थी।

खेतसिंह को भूदेशर नगर पसन्द आया, इसलिए उसने वहीं अपना निवास बनाया। कपास का व्यापार शुरु किया। उसके पुत्र मेघजी शाह ने पिता को व्यापार में सहायक की भूमिका निभाई। पिता-पुत्र के गुणों की सुवास नगर में चारों ओर फैलने लगी।

प्रधान काजल शाह की नजर में इस पिता-पुत्र की जोड़ी सूरमे की तरह बस गई थी। उसे अपनी बहन के लिए मेघजी योग्य पात्र लगने लगा। इसलिए एक बार स्वयं खेतसिंह के घर आकर उसने मृगा-देवी का विवाह मेघजी से करने का प्रस्ताव रखा।

खेतसिंह ने भी विचार किया कि, "प्रधान के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध प्रस्थापित करने के लिए यह एक सुनहरा अवसर है। सचिव समधी कहीं तो उपयोग में आएंगे।"

खेतसिंह ने सहर्ष सहमति दी। बड़ी धूमधाम से मेघजी और मृगादेवी का विवाह संपन्न हुआ।

समय को व्यतीत होने में देर नहीं लगती। खेत-सिंह ने धर्माराधना करते-करते आयु पूर्ण होते ही परलोक की ओर प्रयाण किया।

शुद्धि और सिद्धि का उपाय

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

अहो! आज हम अरिहंत बनने के सफर के 14 वें मुकाम पर पहुँच चुके हैं। और आज जिस मुकाम पर खड़े हैं उसका नाम है - **तप पद।**

तपस्या और जीवदया ये दोनों ही जैनियों की पहचान है। हमारा धर्म महान क्यों है? क्योंकि इसमें दो ही बातों पर अधिक जोर डाला गया है, खुद पर नियंत्रण करो, और दूसरों पर अनुग्रह करो।

यूँ देखें तो खुद पर नियंत्रण करना भी एक बहुत बड़ी जीवदया है, और दूसरी ओर दूसरों पर अनुग्रह करना अपने आपमें एक बहुत बड़ी तपस्या है। आइए इन दोनों ही बातों को जरा गौर से जानें।

क्रोध में आकर हमें दूसरे को पीड़ा देने का मन हो जाता है। यदि ऐसे समय में खुद पर नियंत्रण रखा तो वह तपस्या भी हुई और जीवदया भी।

रास्ते से गुजरते वक्त यदि कुछ अभक्ष्य खाने-पीने का मन हो गया। लेकिन उस समय नियंत्रण रखा तो यह तपस्या भी की, और उस खाने-पीने में रहे हुए जीवों की रक्षा भी की।

जब हम उपवास करते हैं, भूखे रहते हैं, तो अपने आप शरीर शांत हो जाता है, शरीर की धातुएँ निर्मल हो जाती हैं। शरीर के शांत होने के साथ ही मन भी शांत होता है, आत्मा निर्मल हो जाती है। सारे दोषों और दुर्गुणों की जन्मभूमि शैतानी मन है।

जब हम उपवास करते हैं, तो शैतान मन में से भाग जाता है और मन में देवता का वास हो जाता है, मन ईश्वर का मंदिर बन जाता है। और ईश्वर कभी भी औरों को पीड़ा नहीं देते। तो देखो तपस्या करते-करते जीवदया भी अपने आप हो गई।

इस बार कोरोना की नागचूड़ में पूरा देश फँसा है। फिर भी आश्चर्य की बात देखें, पूरे भारत में इस बार कम से कम 2000 तपस्वियों ने सामूहिक वर्षीतप की आराधना की है। उसमें अकेले सूरत (गुजरात) शहर में ही 700 तपस्वी आज के इस दूभर समय में उच्च भावना के साथ तपस्या कर रहे हैं। यह सब जिनशासन की बलिहारी है।

कईं प्रसंग है इन तपस्वियों के बारे में। उनमें से एक प्रसंग जानते हैं:

"गुरुदेव! परिवार से छिपकर आयंबिल की ओली करने में पाप लगता है?" गुरुदेव पूज्यपाद भुवन-भानु सूरीश्वरजी महाराजा के पास एक श्राविका बहन ने आकर यह प्रश्न पूछा, और अपनी परि-स्थिति का बयान किया।

"मुझसे आयंबिल मस्ती से हो रहे हैं। परिवार की

पूरी जिम्मेदारी बड़े खयाल से निभाती हूँ। फिर भी मेरे पति मुझे तपस्या की अनुज्ञा नहीं देते। एक दिन आयंबिल करती हूँ, और उनको पता चलता है, तो जबर्दस्ती मुँह में कच्चा पानी डालकर तप तुड़वा कर ही रहते हैं।"

"ओली करना और परिवार को पता न चले, यह कैसे संभव है?" गुरुदेव ने पूछा।

"मैं सब कुछ सम्भाल लूंगी। पर आप इतना बता दीजिए कि क्या इसमें कोई पाप तो नहीं लगेगा ना?"

"तुम्हारी परिस्थिति ही ऐसी है, तो तुम्हें पाप नहीं लगेगा।" गुरुदेव ने उन्हें आज्ञा दे दी।

और फिर अहमदाबाद में कालुशी की पोल में रहने वाली उस श्राविका दमयंती बहन ने वर्धमान तप की 100 ओली अपने पति से और परिवार से छुप-कर की। जब 100वीं ओली का पारणा नजदीक था तब अपने पति को हकीकत बताई। और पति फूट-फूटकर रो पड़ा। उसके पैरों में गिरकर बोला,

"मुझसे बहुत बड़ा पाप हो गया। तू पत्नी नहीं, देवी है। तेरे तप से ही मेरी उन्नति है।"

दुःखिओं के दुःख और पापियों के पाप दोनों को मूल से काटने की क्षमता तपस्या में है। जरूरत है थोड़ा धैर्य रखने की।

तप से तन, मन और जीवन की शुद्धि होती है। दुःखों और दोषों का क्षय होता है। कर्म और कषाय का उच्छेद होता है। पाप, ताप और संताप का नाश होता है। शुद्धि और सिद्धि मिलती है। ऋद्धि और लब्धि प्राप्त होती है। ऐसा कुछ भी नहीं जो तप से प्राप्त नहीं हो सकता हो। ऐसी कोई भी समस्या नहीं, जो तपस्या से सुलझ न सकती हो। इसीलिए तपस्या कीजिए और गुनगुनाइये यह गीत...

॥ तप पद ॥

(तर्ज : हूँ मीरा हूँ राधिका...)

तप से होता काय का कषाय का दमन,
तप से मन का है शमन, मिले अमन चमन;
तप बनाये आत्मा को अमल,
तप का प्रकृति पे भी अमल है सबल...

तारे हजार यहाँ आस-पास हैं,
सैकड़ों फूलों की भी बरसात है;
कुछ तो यहाँ खास है, हाँ तपस्वी साथ है,
उनकी सेवा में यह प्रकृति का अवतरण,
ना कहीं विषाद है, दुःख की ना ही बात है,
है प्रकाश और सुवासमय पूरा चमन;
जिसके बल से ना जला था द्वारिका नगर,
देव भी करें तपस्वी की बड़ी कदर... तप...1॥

भोग की पुकार से बधिर है जहां,
ईन्द्रियों की तृप्ति की ये मिजबानियाँ;
फिर भी प्यास ना छिपी, किन्तु बढ़ती ही चली,
कैसे होगी दूर अब ये हैरानियाँ;
कोई आ के बोल दे, तप का द्वार खोल दे;
तंग कर गई मुझे परेशानियाँ;
तप का आचरण करूँगा भोग रोक कर;
हौसला है तप की राह पर बढ़ें कदम... तप...2॥

Think Beyond

देव कौन और नारकी कौन?

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक पौराणिक कथा है;

एक बार नरक के जीवों ने ईश्वर से शिकायत की, "आप पक्षपात करते हैं। देवों को आनंद और सुख देते हैं, और हमें दुख, त्रास और पीड़ा देते हैं।"

ईश्वर ने कहा, "नहीं! मैं कोई पक्षपात नहीं करता। सभी को अपनी योग्यता और कर्मों के अनुसार सुख-दुख मिलते हैं।" फिर भी नरक के जीव मानने को तैयार नहीं थे। तब ईश्वर ने कहा, "आप को अवसर आने पर यह समझाऊँगा।"

कुछ दिनों के बाद ईश्वर ने अपने जन्म-दिन पर देवों और नारकियों, दोनों को आमंत्रण दिया। दोनों के लिए अलग-अलग हॉल में भोजन रखा गया था। नरक के जीव डायनिंग टेबल पर आकर बैठ गये। सारे व्यंजन परोसे गये। पर तकलीफ यह थी कि किसी का भी हाथ कोहनी से मुड़ नहीं रहा था। इसलिए हाथ में लिया हुआ निवाला मुँह तक पहुँच ही नहीं रहा था। हाथ मोड़ने की कोशिश में बाजूवाले को थप्पड़ लगने लगी। फिर तो सब गुस्से से एक दूसरे को मारने लगे, मारामारी शुरु हो गई। इतने में ईश्वर वहाँ आ गये। तो नरक के जीवों ने उनसे शिकायत की, "भगवान! आपने हमें यहाँ बुलाकर हमारा अपमान किया है। व्यंजन तो परोसे गए, पर कोहनी नहीं मुड़ रही। इस वजह से हम में आपस में मारामारी हो गई।

ईश्वर ने कहा, "पहले मेरे साथ चलो।" नरक के सभी जीवों को लेकर भगवान देवों के हॉल के बाहर गए और कहा, "अंदर के दृश्य को देखो।" डायनींग टेबल पर बैठे हुए देवों के हाथ भी कोहनी से नहीं मुड़ रहे थे, फिर भी सभी टेस्ट लेकर मस्ती से अपने हाथ का निवाला बाजूवाले को खिला रहे थे, बाजूवाला उसके बाजूवाले को; इस तरह सभी लिज्जत और स्वाद से व्यंजन खा रहे थे। फिर ईश्वर ने नरक के जीवों से कहा, "देखो! जो केवल अपने ही सुख का विचार करता है, वह दुःखी ही रहता है। जो दूसरों के सुख का विचार करता है, वह सुखी और आनंदित ही रहता है। मैं किसी भी तरह का पक्षपात नहीं करता, किन्तु आपकी योग्यता ही ऐसी है कि आपको दुःख, त्रास और पीड़ा ही मिल रही है।"

इस कथा का सार यह है कि,

"जो दूसरों को थप्पड़ मारना चाहे, वह नरक का जीव है, और
जो दूसरों के मुँह में मिठाई रखे, वह देव का जीव है।"

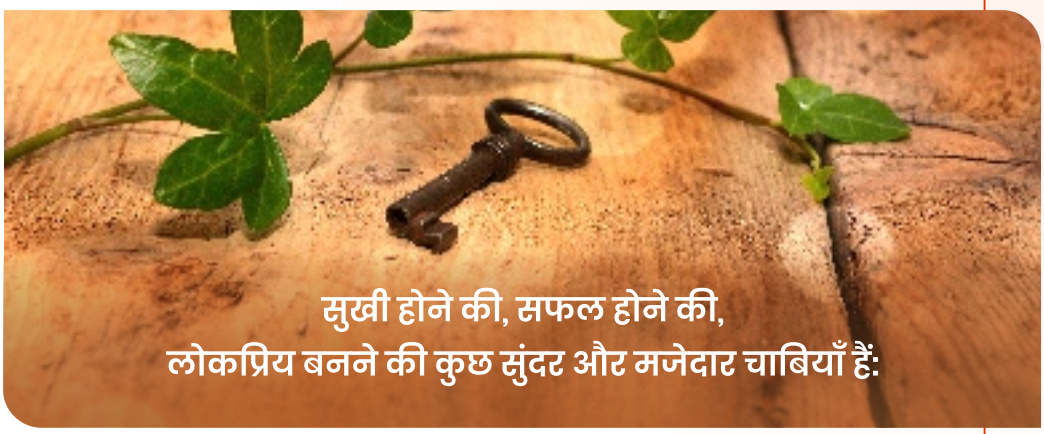

**सुखी होने की, सफल होने की,
लोकप्रिय बनने की कुछ सुंदर और मजेदार चाबियाँ हैं:**

- दूसरे जीवों को ज्यादा से ज्यादा सुखी करो, शाता दो, सहायता करो।
- हमारी वाणी और वर्तन से किसी जीव को दुःख, पीड़ा, अशाता ना पहुँचे इस बात का ध्यान रखो।
- कार्य सफल हो जाये तो यश दूसरों को दो, और काम बिगड़ जाये, निष्फल हो जाये तो अपयश की टोपी अपने सर पर पहनो।
- छोटे लोगों को भी बड़ा मानो, आगे बढ़ाओ, यश दो।
- छोटे लोगों की, दुःखी लोगों की, वृद्ध और बुजुर्गों की बातों को, शिकायतों को शांति से सुनो।
- दूसरों पर उपकार करके, उसे भूल जाओ; उसे बार-बार याद मत दिलाओ।
- दूसरों की गलतियाँ मत निकालो। बार-बार दूसरों की गलतियाँ निकालने से अप्रिय बनने की संभावना रहती है।

एक बात याद रखिए,

"दूसरों की भूल, छोटी भूल होती है, पर दूसरों की भूल बताने की हमारी भूल - यह बड़ी भूल है।"

"दूसरों की भूलों को सुधारना - यह फिर भी चलेगा, पर कोई आपके प्रति का सद्भाव गंवा दे, यह तो कभी भी नहीं चल सकता।"

चलिए, आज से संकल्प करते हैं कि:

रोज कम से कम एक व्यक्ति को तो सुखी करने का, शाता देने का प्रयत्न करूँगा, और
रोज कम से कम एक व्यक्ति की भूलों को माफ करूँगा।

Temper : A Terror – 13

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(पंच दिव्यों के द्वारा पाटलिपुत्र के राजा के रूप में अमर का राज्याभिषेक हो गया। एक से एक आश्चर्य होने लगे। तत्पश्चात क्या होता है...पढ़िए...!)

अल्कापुरी को भी निस्तेज कर दे ऐसी रोशनी राज-महल से निकल रही थी। ऊँकार से शुरु हो रहा अगणित मंत्रों का मंत्रोच्चार पूरी राजसभा में गूँज रहा था।

पूरी राजसभा खचाखच भरी हुई थी। एक सुई भी समा न सके उतनी भीड़ आज छलक रही थी। आज राज्याभिषेक का महामहोत्सव चल रहा था। पाटलिपुत्र में आश्चर्यकारी घटनाओं की आखिरी श्रृंखला की घड़ी आ पहुँची थी।

अमर राजगद्दी पर बैठा हुआ था, रत्नमंजरी उसके पास बैठी हुई थी। वह विचारों में गुम हुई नजर आ रही थी। राजपुरोहित पाटलिपुत्र की प्रथा के अनुसार एक धार्मिक ग्रंथ लेकर आगे आया। अमर खड़ा हो गया।

"इन सभी लोगों की साक्षी में और इस पवित्र ग्रंथ की साक्षी में मैं राजपुरोहित ब्रह्म आपको पाटलि-पुत्र का राजा घोषित करता हूँ।" अमर ने दोनों हाथ जोड़ दिये।

अभिषेक की विधि पूरी होने के बाद अमर राजा के संबोधन का समय करीब आ गया। इतनी सारी सिद्धियों को प्राप्त करने के बाद प्रजा का संबोधन करने में अमर को डर नहीं लग रहा था। मंत्रीश्वर ने राजा की छड़ी पुकारी और अमर राजा खड़ा हो गया।

उसकी चलने की पद्धति को देखकर कोई भी नहीं कह सकता था कि अमर का अभी ही राज्याभिषेक हुआ है। वह राज्याभिषेक के लिए तैयार किये गये मंच पर आगे आया।

"मेरे प्यारे प्रजाजनों!" अपने उदात्त स्वर में अमर राजा ने प्रस्तावना की। किसी भी व्यक्ति की सिद्धि के पीछे उस व्यक्ति के पुण्य के साथ-साथ कुछ सहायकों की महत्व की भूमिका होती है। प्रजा-जनों! मैं भी पाटलिपुत्र के लिए तो विदेशी ही था, पर यहाँ की प्रजा ने मुझे अपने राजा के रूप में स्वीकार करके और खास करके पिछले दो महीने में मुझे संभालकर मुझ पर बहुत उपकार किया है। और इसीलिए..." समग्र प्रजा में नीरव शांति छायी हुई थी। राजा के एक-एक शब्द को सुनने के लिए प्रजा उत्सुक थी।

"...मुझे इस स्तर पर पहुँचाने के लिए मेरे मित्र मित्रानन्द को मैं महामात्य पद पर आरोपित करता हूँ।" लोग जयकार करते उसके पहले राजा ने अपना हाथ ऊपर करके प्रजाजनों को शांत रहने का इशारा किया। "और साथ में रत्नसार श्रेष्ठी..." सभी की नजर श्रेष्ठी की ओर गई। वह नतमस्तक होकर खड़ा था। "...कि जिन्होंने मुझे पुत्रतुल्य संभाला, उन्हें मैं नगरसेठ की पदवी से सुशोभित करता हूँ।"

प्रजा में आनंद की लहर फैल गई। तीसरी बार जय-जयकार की आवाज पाटलिपुत्र में गूँज उठी।

अलकतक रस से भी ज्यादा शीतल पवन झरोखे से आ रहा था। पर बाहर की ठंड मित्रानन्द मंत्री के मन में उद्भवित गर्मी को शांत करने के लिए सफल नहीं हो रही थी।

राजा अमर के मुख पर भी मंत्री के हृदय की गर्मी का लालपन दिखाई दे रहा था। राजा बनने के बाद अमरदत्त पाटलिपुत्र को एक ऐसे गरिमापूर्ण स्थान पर स्थापित करने में सफल हुआ था, कि जो असंभव कार्य था। एकछत्र शासन अबाधित रूप से चल रहा था। दुश्मनों की आँखें इस ओर देखने के पहले ही चकाचौंध हो जाये ऐसा तेज पाटलि-पुत्र से निकल रहा था।

पर उन सारी सिद्धियों में भी अमर और मित्रानन्द के हृदय बैचेन ही थे।

"मित्रानंद! कितनी रात बीत गई है! पर तू निर्णय नहीं ले रहा है!" जम्हाई खाते-खाते गंभीर चेहरे से अमर राजा ने मित्रानन्द के समक्ष देखा।

"राजन्! किस तरह से निर्णय ले लूँ? एक ओर विरह है, दूसरी ओर भय है..." क्या करूँ? सख्त हृदय से मंत्री मित्रानन्द की आँखों में आँसू भर आये। राजा मित्रानन्द की असहायता को देख रहे थे।

"यह मित्रानन्द मंत्री है?" राजा के मन में विचार चमका।

"देख मित्रानन्द! तू उस शव के द्वारा कहे गये वचनों को भूल नहीं सकता है, इसलिए उस गाँव के नजदीक होने के कारण तू सो भी नहीं सकता है। इस तरह से तो तू जीते जी मर जायेगा... फिर..." राजा की आँखों में भी पानी आ गया। एक अज्ञात उदासी वातावरण में फैल गई। आधी घड़ी तक मौन छाया रहा।

"राजा!" मित्रानन्द ने मौन तोड़ते हुए कहा, "मैंने निर्णय ले लिया है। मुझे पाटलिपुत्र छोड़कर जाना है। सिर्फ जाना नहीं है, पर बहुत दूर जाना है। मुझे अनुमति दीजिये।" राजा के विरह से मित्रानन्द की आँखें बरस रही थी। पर सभी परिस्थिति के आधीन थे।

भारी मन से राजा उठ खड़ा हुआ। शोक से भरी हुई आवाज में राजा ने आखिरी शब्द कहे,

"तथाऽस्तु...!"

(क्रमशः)

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
80878 75828 | 92704 56160